ऋतम्बरा महाकाव्य में सौन्दर्य योजना

डॉ. सुनीता, सहायक प्रवक्ता हिंदी
राजकीय महिला महाविद्यालय, पाली, रेवाड़ी ।

सौन्दर्य का अर्थ होता है अच्छी प्रकार से आर्द्र या रसासिक्त करने वाला । कुछ विद्वानों के मत में सौन्दर्य का अर्थ है अच्छी प्रकार प्रसन्न करने वाला । भाषा वैज्ञानिकों की दृष्टि में यह शब्द 'उन्द' और 'नन्द' धातुओं से निष्पन्न है । 'सुनर' में 'द' वर्ग का आगम होने पर सुंदर शब्द बनता है । 'सुन्द' को लाने वाला सुन्दर और सुन्दर भाव से युक्त सौन्दर्य कहलाता है । साहित्य में सौन्दर्य की अभिव्यक्ति सदा से होती आई है । मानव सदा से आनन्द कामी रहा है इसी आनन्द को प्राप्ति के लिए वह सौन्दर्य का रूपांकन कला में करता आया है । डॉ सुधा सक्सेना के मतानुसार **"व्यापक रूप में सौन्दर्य वह है जो हमारी ज्ञानेन्द्रियों को प्रिय लगे । प्रियता का भाव सौन्दर्य का मूल है .....सौन्दर्य का यह भाव विषयगत या विषयीगत दोनों हो सकता है । सौन्दर्य का मूल सामंजस्य अथवा समुचित संगठन (Harmony) में निहित है ।"** 1

सौन्दर्य आनंद को पहली शर्त है । काव्य रचना करते समय कवि को आनन्दानुभूति होती है तो पढ़ते समय पाठक को आनन्द आता है । काव्य कला में सौन्दर्य बाह्य और आंतरिक दोनों ही रूपों में विद्यमान रहता है । डॉ. वीणा माथुर का अभिमत है –" **जिस प्रकार पुष्प में सुगंध एवं मृदुलता है और चंद्रमा में शीतलता एवं स्निगधता उसी प्रकार काव्य में सौन्दर्यानुभूति है ।"** 2

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कि मान्यता है कि – " **सौन्दर्य का दर्शन मनुष्य मनुष्य में ही नही करता है, प्रत्युत गुम्फित पुष्प हास में,पक्षियों के पक्षजाल में सिन्दुराम सांध्य दिगंचल में हिरण्य में मेखलामंडित 'धनखंड में तुषाराव्रत तुंग गिरी शिखर में न जाने कितनी वस्तुओं में वह सौन्दर्य की झलक पाता है ।"** 3

शुक्लजी के उपर्युक्त कथन के आधार पर सौन्दर्य कि दो कोटिया मानी जा सकती है (1) मानव सौन्दर्य (2)प्रकृति सौन्दर्य । इस संदर्भ में 'प्रभात' का कथन है कि "कवि शाश्वत सौन्दर्य का लिपिक होता है । वह शब्दों की आत्मा में अपने को अपने युग को सम्पूर्ण का वर्तमान को एवं समस्त भविष्य को छितरा देता है और इस विलयन का प्रत्येक क्षण, प्रत्येक कण जीवन के गीत निरवशेष स्वर बनकर गूंजता रहता है । शब्द सौन्दर्य साक्षात्कार तभी होता है जब कवि अपने को बिसार कर, अपने बाह्य रूप को भूलकर उस ज्योतिमर्य चेतना लोक में पहुँच जाता है, जहाँ की रूपाभा निहारकर साधारण व्यक्ति कुछ बोल भी नही सकता । सांसे चलती रहती हैं, मन का भोलापन प्रश्न करता है । चेतनयमान मस्तिष्क उतर देता है । जीवन की सबसे बड़ी सच्चाई यही है । उसकी अभिव्यंजना काव्य-गरिमा के नाम से की जाती है ।

प्रभात के महाकाव्य 'ऋतम्बरा में भी काव्य सौन्दर्य की बाह्य और आन्तरिक रंगोज्ज्वल छवियाँ बिखरी हैं । उनका काव्य मानव और प्रकृति के सौन्दर्य की आलोक मधुर शोभा में मंजिल है ।

1. **मानव सौन्दर्य :-**

प्रभात जी मानव को निखिल सृष्टि का सुन्दरता प्राणी मानते है । प्रभात जी को मान्यता है कि मानव का धरती पर जन्म सृष्टि की एक सुनहली घटना है । वें मानव के बाह्य सौन्दर्य पर ही विमुग्ध नही होते अपितु साथ ही साथ उसके आन्तरिक सौन्दर्य की बात करते हैं जिसके अंतर्गत उनकी रागात्मक वृतियां करुणा, त्याग, तितिक्षा, प्रेम, वात्सल्य आदि शामिल हैं उनका मानना है कि असली सौन्दर्य तो आत्मिक उदारता का है । वह भाव और विचारों की श्रेष्ठता का होता है । उनके प्रबंध काव्यों में इसी सौन्दर्य की अवतारणा हुई है ।

क) **पुरुष सौन्दर्य :-**

प्रभात के यहाँ पुरुष कर्म का प्रतीक है । उसका तेज, बल, पराक्रम और ओज प्रभात का प्रिय हैं । उनके प्रबंध काव्यों के प्राय सभी नायक इसी पौरुषेय सौन्दर्य से अभिमंडित हैं । ऋतम्बरा में कवि उन्हें यज्ञपुरुष के रूप में चित्रित है:-

"विधि चले और बढ़ते जाते
मानो तमाल तरु चलता हैं ।
अथवा भपुंज पिघलता हो
प्राणों में जिसके तप पलता हो
मानो वह यज्ञ पुरुष चलता
मणि श्रृंग कुछ से कढ़ता हो
आवर्त चिर कर बढ़ता हो
दृग से ज्वाला कण फुट रहे
आलोक विशिख या छुट रहे
पलको में शौर्य झलकता सा
गौरव का तेज छलकता सा ।" 4

"मस्तक गोल सुडौल और यह भव्य काल प्रतिभामय प्रोज्जवल
तेजोमय आलोक विमंडित
सौम्य शांत यह मृदु मुख्य मंडल
लौह भुजाएं लम्बी-लम्बी
पवि सा यह विशाल वक्ष स्थल
यह शरीरबल और शौर्य का
पुंज प्रज्जवलित मोहक माँसल।" 5

इस प्रकार हम देखते है कि ऋतम्बरा काव्य का पुरुष कर्म सौन्दर्य का उपासक है । वह 'चाकलेटी हीरो' न होकर लोकमंगल कि साधना करने वाले वीर पुरुष है उनके सौन्दर्य का प्रमुख आकर्षण वीरता और शक्ति है । नायक की यही छाति जन-जन के मन में उनके प्रति आकर्षण और सम्मोहन पैदा करती है क्योंकि –**"कविता केवल वस्तुओं के ही रंग रूप में सौन्दर्य की घटा नही दिखाती , प्रत्युत कर्म और मनोवृत के सौन्दर्य के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है ।"** 6

ख) **नारी सौन्दर्य:-**

नारी पुरुष के लिए सृष्टि के आदिकाल से ही आकर्षण का विषय रही है उसकी रुपामा, नाना क्रियाए, और छवियाँ पुरुष के मन में सौन्दर्य की शत-शत पुलकनें गुंथती हैं और वह प्रेम और आकर्षण का कारण बनती है । पुरुष की तरह ही प्रभात नारी के भी बाह्य सौन्दर्य के साथ

साथ उसके उदात और गरिमामय चरित्र के उपासक हैं :-

"यही कला पहली रमणी थी
किंशुक कि सी सुधराई
जिसके आंगन में उतरी थी
प्रथम लाज कि अरुणाई
यही कला थी तरुणाई की
पहली भार नामित डाली
प्रथम सुष्मिता, प्रथम शुभांगी
अनाघात फूलो वाली
नयन उठे तो पलभर में
सब ओर बसंत पुकार उठा
अंधरों पर मुस्कान खिली तो
प्रकृति बन गयी प्यारमयी
देहलता मृदु-मधु रस बोरी
अपने में न समाती सी" । 7

"सुन्दरी एक अनमोल रूप
मानो लावण्य सरोवर में हो खड़ी
इंद्रधनु की लचकीली लतिका रस से
तन के ईशत भी हिलने से सराबोर
तन जाती थी कंचुकी डोर
सुस्पष्ट दिख पड़ता था तब
उरजातो का स्मर – विकल गर्व
मन हरने वाला कम पर्व" । 8

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रभात के प्रबंध काव्यों में चित्रित नारी का सौन्दर्य मन में कामुकता और विलासिता पैदा करने वाला नहीं वरन पाठक के हृदय में ओज व शक्ति की बिजलियाँ पैदा करने वाला वह रूप है जो आखों के सांचे में ढलकर उसके मन में सौन्दर्य की शत-शत पुलकनें गूँथ देता है।

2. **प्रकृति सौन्दर्य :-**

प्रकृति का राशी राशी सौन्दर्य मानव मन में भांति-भांति से आकर्षण पैदा करता है । मानव और प्रकृति का बड़ा ही घनिष्ठ सम्बन्ध है । जन्म से लेकर मृत्यु तक, सौन्दर्य के आह्लाद उत्फुल्लता, चेतनता आदि गुण किसी न किसी प्रकार से प्रकृति और मानवीय रूपों में समान रूप से पाए जाते हैं । प्रभात के प्रबंध काव्य ऋतम्बरा में प्रकृति के अत्यंत सौन्द्रशाली रूपों का चित्रांकन हुआ हैं । इस दृष्टि से उनकी सौन्दर्य सृष्टि कालीन भौमिक जलीय चित्रों का सुन्दर चित्रण करती है । ऋतम्बरा महाकाव्य में जल-तल पर प्रकट हुए अरुण कंज की सुषमा का आलोक कवि की वाणी में कुछ कुछ इस प्रकार प्रस्फुटित हुआ:-

"लाली लगी छिटकने
अनजान किसी कोने से
मानो निकला आता हो
सौन्दर्य जलज दोने से
आगमन मुहर्त किसी का
मानो सजधज आता हो
स्वागत में कल्पक पल ही
मानो पथ बन जाता हो ।" 9

इसी महाकाव्य में पृथिवी के रूप वर्णन में कवि ने उसे मानवीय संवेदनाओं और सौन्दर्य की नयनाभिराम विशिष्ठताओं से संपृक्त करके प्रस्तुत किया है :-

"सहसा मनु ने विस्मय से देखा
परिसरवर्ती पर्णल वन-वीथी में ललाम
फूल- कलियों के बीच खड़ीनयना मिराम
सुन्दरी एक अनमोल रूप
मानो लावण्य सरोवर में हो खड़ी
इन्द्रधनु की लचकीली लतिका रस से सरोबर ।" 10

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रभात के ऋतम्बरा महाकाव्य में सौन्दर्य के शुक्ष्म व स्थूल दोनों ही रूपों को बखूबी चित्रित किया जिसके द्वारा कवि अधिकांश पाठको के मन मस्तिष्क तक अपनी रचना के उद्देश्य को पहुचाने में सफल हो पाता है क्योंकि संस्कृति का प्रत्येक प्राणी किसी न किसी रूप में, किसी न किसी भाव से, किसी न किसी उद्देश्य से सौन्दर्य उपासक अवश्य रहता है । कवि प्रभात ने पाठक की इस नब्ज को पकड़ते हुए अपने महाकाव्य ऋतम्बरा को सौन्दर्य से परिपूर्ण बनाकर पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया जिसका भरपूर आनन्द स्वयम कवि एवं पाठक ने लिया । यही आनन्द इस महाकाव्य को श्रेष्ठ महाकाव्यों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देता है ।

1. डॉ. सुधा सक्सेना, जायसी की बिम्ब योजना पृष्ट 1
2. डॉ. वीणा माथुर, प्रसाद का सौन्दर्य – दर्शन पृष्ट 52
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, रस मीमांसा पृष्ठ सं 25
4. ऋतम्बरा पृष्ठ सं 49
5. ऋतम्बरा पृष्ठ 118
6. आचार्य शुक्ल, रस मीमांसा पृष्ठ 3
7. ऋतम्बरा पृष्ठ 94
8. ऋतम्बरा पृष्ठ 45
9. ऋतम्बरा पृष्ठ 29
10. ऋतम्बरा पृष्ठ 145